K. Nand M.A II Sem's (2)

Q:- ~~बण्डूरा के सामाजिक शिक्षण दृष्टिकोण का वर्णन करें~~
Explain Bandura's view of social learning.

Ans:- बण्डूरा (1965) द्वारा प्रतिपादित सामाजिक शिक्षण सिद्धान्त के कई अन्य मनोविज्ञानियों ~~का~~ ~~प्रयास~~ का भी योगदान महत्वपूर्ण है। मनुष्य के जटिल व्यवहारों को सीखने की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त सर्वाधिक सफल माना जाता है। यह सिद्धान्त सामाजिक संज्ञान को व्यवहार अर्जन का आधार मानता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के निष्पादन के अवलोकन से किस प्रकार सीखता है, यही इस सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु है। बण्डूरा (1965) के अनुसार व्यक्ति अवलोकन के आधार पर जटिल व्यवहारों को शीघ्रता के साथ अर्जित कर लेता है। आदर्श-व्यवहार के परिणामों का प्रभाव अनुकूल प्रतिक्रियाओं के निष्पादन पर पड़ता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के व्यवहार या निष्पादन को आदर्श मानकर उसके अच्छे-बुरे परिणामों को ध्यान रखते हुए उसे अर्जित करने या नहीं करने के लिए अनुप्रेरित होता है।

बैण्डूरा (1965) द्वारा अपने दृष्टिकोण को प्रमाणित करने के लिए बच्चों पर प्रयोग किए। उन्होंने बच्चों को फिल्म के द्वारा एक वयस्क व्यक्ति के आक्रमणकारी व्यवहार को दिखलाया। इसके पश्चात् बच्चों को तीन समूहों में बाँट दिया गया। प्रथम समूह के बच्चों को उस व्यक्ति के आक्रमणकारी व्यवहार के लिए दंडित होते, दूसरे को पुरस्कृत होते तथा तीसरे समूह के बच्चों को नियंत्रित रखा गया। इसके बाद प्रत्येक समूह के बच्चों की जाँच की गई। दूसरे समूह अर्थात जिसे आक्रमणकारी व्यवहार के लिए वयस्क को

K. Nand M.A. II Sem (1)

7

अपने विचारों को प्रकट करता है और दूसरे के विचारों से परिचित होता है। भाषा के माध्यम से ही समाज में विचारों का आदान-प्रदान होता है। इससे समाजीकरण की प्रक्रिया को बल मिलता है। बच्चों में पाया गया है कि उनका समाजीकरण माता-पिता द्वारा प्रयोग में लाए गए शब्दों एवं भाव-भंगिमाओं से प्रभावित होता है। बच्चे उन शब्दों को ध्यान पूर्वक सुनते हैं और उनकी भाव-भंगिमाओं का अवलोकन कर उस शब्द का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं। इसी प्रकार बच्चे नए-नए सामाजिक व्यवहार को करना धीरे-धीरे सीखते जाते हैं और उनका समाजीकरण होता है।

(ग) राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक संस्थाएँ :— समाजीकरण में भिन्न-भिन्न सामाजिक संस्थाओं यथा: — राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक संस्थाओं का भी विशेष महत्त्व है। राजनैतिक संस्थाओं का प्रभाव सामाजिक शिक्षण पर सर्वाधिक पड़ते पाया गया है। प्रत्येक राजनैतिक दल कुछ सिद्धान्तों एवं आदर्शों के साथ अपने समर्थकों के बीच जाते हैं और इसका प्रचार-प्रसार करते हैं। इससे इनके बीच समाजीकरण की भावना एवं व्यवहारों का विकास उत्पन्न होता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने एवं परिवार के भरण-पोषण के लिए आर्थिक गतिविधियों, यथा: खेती, नौकरी, व्यवसाय करने वालों के समूह में सम्मिलित होना पड़ता है। इस दौरान वहाँ के कार्यरत अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया कर नए-नए सामाजिक व्यवहारों को सीखते हैं।

धार्मिक संस्थाएँ भी अपने अनुयायियों के बीच अपने विश्वासों, विचारों एवं मूल्यों का प्रचार-प्रसार करते हैं। समूह के सदस्य अन्तःक्रिया के माध्यम से सामाजिक शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवहारों को प्रकट करते हैं।

ऊपर वर्णित स्रोतों या साधनों के द्वारा व्यक्ति सामाजिक शिक्षण प्राप्त करता है और इसी के अनुरूप सामाजिक व्यवहार करता है।

The End.